

**सामाजिकेतर वि. (तत्.)** ऐसा व्यक्ति जो सामाजिक न हो।

**सामान पुं. (फ़ा.)** 1. विविध वस्तुओं का समूह 2. किसी कार्य के लिए आवश्यक वस्तुएँ 3. सामग्री जैसे- पूजा का सामान 4. गृहस्थी के उपयोग की वस्तुएँ 5. उपकरण, औजार-बढ़ई का सामान।

**सामानिक वि. (तत्.)** जो पद में किसी के समान हो।

**सामान्य वि. (तत्.)** 1. जो विशेष न हो 2. साधारण, मामूली 3. तुच्छ, महत्वहीन 4. प्रायः सभी व्यक्तियों, स्थानों, अवसरों आदि में पाया जाने वाला 5. सार्वजनिक, सब लोगों का 6. जो अपनी साधारण अवस्था या स्थिति में हो, घटा-बढ़ा न हो 7. एक अर्थालंकार जहाँ दो या अधिक वस्तुओं का पृथक् अस्तित्व होते हुए भी एकरूपता, समानता आदि के कारण भेद न जान पड़े 8. वैशेषिक दर्शन के मूलभूत द्रव्य आदि 6 पदार्थों में से एक।

**सामान्यछल पुं. (तत्.)** वाक् छल का एक भेद जिसमें प्रतिवादी के कथन को बहुत व्यापक बना दिया जाता है, न्याय शास्त्र में, एक प्रकार का छल जिसमें संभावित अर्थ के स्थान पर जाति-सामान्य अर्थ के योग से असंभूत अर्थ की कल्पना की जाती है।

**सामान्यतः क्रि.वि. (तत्.)** 1. सामान्य रूप से, मामूली तौर से, आमतौर से।

**सामान्यतया क्रि.वि. (तत्.)** दे. सामान्यतः।

**सामान्यता स्त्री. (तत्.)** 1. सामान्य या मामूली होने की अवस्था या भाव 2. वह गुण, तत्व या बात जो सामान्य हो 3. सामान्य होने या पाए जाने की अवस्था या भाव।

**सामान्यतोदृष्ट वि. (तत्.)** एकत्व से देखा गया पुं. अनुमान-प्रमाण का एक प्रकार, विभिन्न स्थानों में एकत्व से देखे गए व्यक्ति या पदार्थ से होने वाले अदृष्ट अर्थ का अनुमान, एक प्रकार का अनुमान-प्रमाण जो न तो कारण से कार्य के रूप में निकाला गया हो और न कार्य

से कारण के रूप में, कारण-कार्य संबंध से भिन्न साधर्म्य।

**सामान्य-निबंधना स्त्री. (तत्.)** साहित्य में, अप्रस्तुत प्रशंसा नामक अलंकार का एक भेद जिसमें प्रस्तुत के लिए किसी अप्रस्तुत सामान्य का कथन होता है।

**सामान्य बुद्धि स्त्री. (तत्.)** 1. सहज बुद्धि, समझ-बूझ 2. व्यावहारिक बुद्धि जो विद्या अध्ययन से नहीं अपितु अनुभव से प्राप्त होती है 3. प्रायः सब प्रकार के जीवों में पाई जाने वाली वह सामान्य या सहज बुद्धि जिससे वे साधारण बातें बिना किसी प्रयत्न के अपने आप सहज ही समझ लेते हैं।

**सामान्य भविष्यत् पुं. (तत्.)** भविष्यत काल के तीन भेदों में से एक, जिससे यह ज्ञात होता है कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी जैसे- वह विद्यालय जाएगा, वह खाना खाएगा।

**सामान्य भूत पुं. (तत्.)** भूतका का एक भेद जिससे यह प्रकट होता है कि क्रिया भूतकाल में हो चुकी है परंतु विशेष समय का ज्ञात नहीं होता।

**सामान्य लक्षण पुं. (तत्.)** वह चिह्न जो जाति भर में पाया जाए।

**सामान्य वर्तमान पुं. (तत्.)** वर्तमान काल का एक भेद जिसमें क्रिया का वर्तमान काल में होना दिखलाया जाता है।

**सामान्य विधि स्त्री. (तत्.)** 1. आदेश का साधारण रूप जिसमें कोई विशेष बात, अपवाद आदि न हो 2. किसी राज्य में प्रचलित परंपरागत विधि-समूह जो उसके निवासियों के आचरण और व्यवहार में प्रकट होता है।

**सामान्य विभाजक पुं. (तत्.)** गणित में समापवर्तक राशि।

**सामान्या स्त्री. (तत्.)** वेश्या, गणिका, वारांगना।

**सामान्यीकरण पुं. (तत्.)** 1. सामान्य सिद्धांत निर्धारित करना 2. अनुकूलित परिस्थिति से